Volume: 4 Issue: 10 Pages: 90-93

दर्शनशास्त्र का प्रादुर्भाव एवं वेदों के साथ संबंध

[*1] डॉ. अनुपम कुमारी

[*1] पूर्व शोध छात्रा, स्नातकोत्तर संस्कृत विभाग, मगध विश्वविद्यालय बोध गया, बिहार, भारत।

Article Info.
E-ISSN: 2583-6528
Impact Factor (SJIF): 6.876
Peer Reviewed Journal
Available online:
www.alladvancejournal.com

Received: 20/Sep/2025
Accepted: 18/Oct/2025

***Corresponding Author**
डॉ. अनुपम कुमारी
पूर्व शोध छात्रा, स्नातकोत्तर संस्कृत विभाग,
मगध विश्वविद्यालय बोध गया, बिहार, भारत।

सारांश:
बौद्धकालीन भारत में दार्शनिक विचारधारा एवं चिंतन की महती लहर उमड़ते हुए हम देखते हैं। बौद्ध धर्म के जो विचारक लोग थे उनके लिए तर्क ही उनका प्रमुख शस्त्रागार था। जहां पर सार्वभौम खण्डनात्मक समालोचना के शस्त्र गढ़कर तैयार किए गए थे। नींव को अत्यधिक गहराई में डाले जाने की जरूरत का ही परिणाम महान दार्शनिक हलचल के रूप में अवतरित हुआ। जिससे 6 दर्शनों की उत्पत्ति हुई। जिसमें धर्म एवं काव्य का स्थान शुष्क समीक्षा तथा विश्लेषण ने ले लिया। रूढ़िवादी लोग अपने चिंतन तथा विचारों को संहिताबद्ध करने एवं उनके रक्षा हेतु तार्किक प्रमाणों का आश्रय लेने को बाध्य हो गए। वे आध्यात्मिक जीवन एवं ब्रह्म ज्ञान की सुंदर व्याख्या करते हैं अगर मनुष्य यथार्थ सत्य की प्राप्ति तर्क के द्वारा नहीं कर सकता है तो अवश्य ही उसे उन महान एवं आदर्श ऋषियों के महान लेख की सहायता प्राप्त करनी चाहिए। इस प्रकार से जो कुछ भी श्रद्धा के माध्यम से अंगीकार किया गया था उसे यथार्थता को तर्क के माध्यम से प्रमाणित करने का प्रबल प्रयास ही दर्शनशास्त्र है क्योंकि इस प्रयास का अन्य नाम दर्शन है जो मनुष्य के अनुभवों का वर्णन एवं व्याख्या करने के लिए उपयोग किया जाता है।

मुख्य शब्द: दर्शनशास्त्र, वेद, आस्तिक दर्शन, दार्शनिक स्वरूप, ब्रह्म, नास्तिक दर्शन, सूत्र साहित्य।

प्रस्तावना:

भूमिका

भारतीय आस्तिक दर्शनों में 6 दर्शनों में यह सभी अत्यधिक विख्यात हुए कपिल का सांख्य दर्शन, महर्षि गौतम का न्याय दर्शन, महर्षि पतंजलि का योग दर्शन, कणाद का वैशेषिक दर्शन महर्षि जैमिनी का मीमांसा दर्शन, एवं बादरायण का वेदांत दर्शन ।यह सभी दर्शन वैदिक दर्शन के नाम से भी जाना जाता है। इसका एक और प्रमुख कारण यह है कि यह सारे दर्शन वेद की प्रमाणिकता को अंगीकार करते हैं आस्तिक या नास्तिक इन किसी भी दर्शन का आस्तिक या नास्तिक होना इसके वास्तविकता एवं अस्तित्व को अंगीकार करना अथवा अस्वीकार करना इन पर आश्रित ना होकर यह वेदों की प्रमाणिकता को स्वीकार या अस्वीकार पर निर्भर करता है। यहां तक की उपनिषदों में बौद्ध धर्म के विभिन्न संप्रदायों का भी उद्गम है। यद्यपि उसे सनातन धर्म के रूप में नहीं स्वीकार किया जाता है क्योंकि वेदों की प्रमाणिकता को वे नहीं मानते हैं। कुमारील भट्ट इन विषयों में जिनकी सम्मति प्रामाणिक मानी जाती है। वे यह मानते हैं कि उपनिषदों से ही बौद्ध दर्शनों ने प्रेरणा प्राप्त की है। तथा इस प्रकार की युक्ति वह देते हैं कि इनका लक्ष्य अत्यंत विषय भोग पर नियंत्रण करना था। और वे यह भी घोषणा करते हैं कि यह सारे दर्शन प्रमाणिक हैं।" [1]

दर्शनशास्त्र की उत्पत्ति एवं विकास

दर्शनशास्त्र का विकास साधारणतः किन्ही ऐतिहासिक परंपरा पर घटित होने वाले किसी प्रबल आक्रमण के कारण ही संभव होती है जबकि मानव एक ऐसा समाज है जो पीछे की तरफ वापस लौटना एवं सारे मूलभूत सवालों को दोबारा पुनः: से उठाने हेतु वह बाध्य होने लगता है जिसका हल उसके पूर्व पुरुषों ने अपनी पुरानी से पुरानी योजनाओं द्वारा दिया था।" [2] दर्शन काल से पहले के जो भी दार्शनिक मत थे उनके द्वारा उसे जगत के स्वरूप के बारे में कतिपय साधारण विचार तो जरूर मिले थे लेकिन किसी ने यह अनुभव नहीं कर पाया कि कोई भी सफल कल्पना का जो आधारभूत तत्व है वह ज्ञान का एक समीक्षात्मक सिद्धांत ही होने चाहिए। उनके इस मत पर समालोचकों ने विरोधियों को मजबूर कर दिया कि वह कोई दिव्य अलौकिक ज्ञान को आश्रय बनाकर अपनी कल्पनाओं की यथार्थता को सिद्ध नहीं करें बल्कि ऐसे सिद्धांतों द्वारा उन्हें प्रमाणित करने का प्रयास करें जो अनुभव तथा जीवन पर आधारित हो उस काल में लोगों का यह आग्रह था कि जो विचारधारा अपने तर्क एवं प्रमाण की कसौटी पर खरा सिद्ध हो सके तो उसे दर्शन की संज्ञा से स्वीकार करना चाहिए। यह सभी जितने दर्शन हैं वह ऐतिहासिक योजना के अंग हैं"। [3]

वेदों में दर्शन की झलक

वैदिक वाङ्मय के कतीपय ऐसे सूक्त हैं जिनमें दार्शनिक स्वरूप एवं दर्शनशास्त्र के कई ऐसे विषय हैं जो इनमें प्राप्त होते हैं। यथा ब्रह्मांड विषयक रोचक प्रश्न कल्पनाओं से संपुटित एवं काव्यात्मकता की झलक इनमें देखने को मिलती है। इनके बाद गद्य एवं पद्य में लिखे गए साहित्य उपनिषद के नाम से मिलते हैं। जिन में अद्वैतवादी अथवा एकात्म वादी विभिन्न दार्शनिक स्वरूपों का उल्लेख प्राप्त होता है।' [4] ऐसा कहा जाता है कि बौद्ध दर्शन से पूर्व वही जैन दर्शन का प्रादुर्भाव हुआ। यद्यपि सैद्धांतिक मतभेद एवं विभिन्न पथ जैन धर्म में रहे हैं फिर भी जैन दर्शन बौद्ध दर्शन की तरह विपरीत दार्शनिक विचारधाराओं तथा अलग-अलग शाखों में विभाजित नहीं हुआ है।" [5] वेदों के बाद जो चिंतन मनन एवं आध्यात्मिक जिज्ञासा की प्रक्रिया का विकास हुआ वह आरण्यक ग्रन्थों में भी देखने को मिलता है उसी का क्रमिक ढांचा उपनिषदों में दिखाई पड़ता है। उपनिषदों का जो दर्शन प्राप्त होता है वह परस्पर विरोधी गुणों का समन्वय है। क्योंकि एक तरफ इनमें ज्ञान मार्ग की उपयोगिता का वर्णन दर्शाया गया है तो वहीं दूसरी तरफ भक्ति मार्ग एवं कर्म मार्ग की एक तरफ प्रवृत्ति मार्ग की प्रधानता है तो वहीं दूसरी तरफ निवृत्ति मार्ग की एक ओर'सर्वखल्विदं ब्रह्म' [6] का उल्लेख किया गया है तो दूसरी ओर द्वैत एवं त्रैत सिद्धांतों की व्याख्या की गई है। उपनिषदों में जो दार्शनिक स्वरूप प्राप्त होते हैं वह हैं श्रेय एवं प्रेय, विद्या एवं अविद्या, कर्म एवं ज्ञान, निवृत्ति एवं प्रवृत्ति, संभूति एवं असंभूति, अद्वैत एवं द्वैत, एकत्व एवं अनेकत्व इन सभी दार्शनिक स्वरूपों को यहां पर दर्शाया गया है। इस प्रकार से यह ज्ञात होता है कि वेदों एवं उपनिषदों को आधार बनाकर प्रमाणिकता की कसौटी पर ही दर्शन शास्त्रों की उत्पत्ति हुई। जिससे तर्क, प्रमाण एवं तथ्यों द्वारा जिज्ञासुओं के शंकाओं का समाधान किया जा सके।

वेद एवं दर्शन का परस्पर संबंध

तर्क की कसौटी को स्वीकार कर लेने पर काल्पनिक मान्यताओं के जो विचारक थे उनके विरोध में निरंतर कमी पड़ती जा रही थी। जिससे यह बात तो स्पष्ट हो चुका था कि उनका जो आधार था वह प्रबल रूप से सशक्त एवं मजबूत नहीं था एवं उनके उसे विचारधाराओं को दर्शन की संज्ञा देना भी उचित नहीं था। वेद को स्वीकार करने का अभिप्राय यही है कि आध्यात्मिक अनुभवों के द्वारा इन सारे विषयों में शुष्क तर्क की अपेक्षा प्रकाश मिलता है। इसका मतलब यह नहीं है कि वह वेद प्रतिपादित सारे सिद्धांतों को भी मानते हैं या फिर ईश्वर की सत्ता में भी विश्वास रखते हैं। इन सब का अभिप्राय यही है जीवन के जो मूल रहस्य हैं उनको उजागर करने हेतु गंभीर प्रयास करना है। न्याय एवं वैशेषिक दर्शन ईश्वर के अस्तित्व को अनुमान प्रमाण के द्वारा ही अंगीकार करते हैं। सांख्य दर्शन ईश्वरवादी नहीं है। योग दर्शन वेद से स्वतंत्र ही है। मीमांसा एवं वेदांत दर्शन का संबंध वेदों से दिखलाई पड़ता है। यह दोनों शास्त्र वेद पर अवश्य निर्भर हैं। पूर्व मीमांसा दर्शन में जिन देवता का उल्लेख किया गया है वह वेद मूलक अवश्य हैं लेकिन पर ब्रह्म के स्वरूप की चिंता उसे नहीं है। वेदांत दर्शन वेदों के आधार पर ही परमात्मा की सत्ता को अंगीकार करता है। लेकिन परमात्मा के अस्तित्व को सिद्ध करने के लिए अनुमान प्रमाण का भी वह वहां पर उपयोग करता है।" [7] इस प्रकार श्रुति की प्रमाणिकता को स्वीकारने से इन सभी 6 दर्शनों की दर्शनिकता में कुछ विशेष अंतर नहीं दिखाई देता है। वेदों में मूल ज्ञान की झलक दिखलाई पड़ती है। उपनिषदों में दार्शनिक विचारधाराओं एवं चिंतन का समावेश है तो वही दर्शन में क्रमिक एवं व्यवस्थित रूप में तर्कपूर्ण मतों एवं सिद्धांतों का प्रतिपादन किया गया है। इस प्रकार से भारतीय दर्शनों में वेदों, तर्क एवं अनुभव इन तीनों का समावेश है। भारतीय दर्शन वेदों के प्रमाण को स्वीकारते हैं। सृष्टि से संबंधित जो भी प्रश्न है वह ऋग्वेद में प्राप्त होते हैं 'कोऽविद्धा वेद क इह प्रवोचत्, कुत आ जायते, कुत इयं विसृष्टिः' [8] (ऋग्वेद10.129.1-7) उपनिषद ग्रंथों में परमात्मा के दार्शनिक स्वरूप एवं ब्रह्म ज्ञान के प्रत्यक्ष स्त्रोत का ज्ञान प्राप्त होता है जैसा कि इन उपनिषदों में ब्रह्म के स्वरूप का वर्णन करते हुए कहा गया है कि 'सर्व खल्विदं ब्रह्म' [9] 'अहम् ब्रह्मास्मि' [10] 'ईशावास्य मिदं सर्वं' [11] आदि इन सभी सूत्रों के आधार पर ही इसने आगे चलकर अद्वैत, द्वैत, विशिष्टाद्वैत, जैसे वेदांतिक सिद्धांतों को उत्पन्न किया। बौद्ध एवं जैन दर्शन नास्तिक दर्शन कहे जाते हैं क्योंकि यह वेदों की प्रमाणिकता को स्वीकार नहीं करते लेकिन फिर भी वेद की प्रमाणिकता को अस्वीकार करने के बावजूद भी ये दर्शन उपनिषदों से प्रभावित हैं। कर्म, आत्मा एवं मोक्ष का वर्णन जैन दर्शन भी करता है। जिससे यही ज्ञात होता है कि वैदिक परंपराओं से यह दर्शन कहीं ना कहीं अप्रत्यक्ष रूप से जुड़े रहे। साधारण से छोटे तुच्छ मानव का इस विशाल जगत में उसका क्या स्थान है, इसका निर्णय लेना दर्शन शास्त्र की मुख्य समस्या है। मानव जाति का ब्राह्मांडीय दृष्टिकोण से उसका महत्व निर्धारित करना ही दार्शनिक जिज्ञासा का विषय है। दर्शन शास्त्र में यह सुनने को मिलता है कि इस सृष्टि की रचना किस प्रकार हुई? संसार का पालन पोषण करने वाला अर्थात सृष्टि को संचालित करने वाला कौन है?ईश्वर की सत्ता है या नहीं? बिना ईश्वर के क्या यह सृष्टि रची जा सकती है? संसार परमाणुओं से निर्मित हुआ है या कोई और चीज का? तत्व पदार्थ कितने हैं? इत्यादि इन सभी सवालों पर तर्क की जाती है। दर्शनशास्त्र इन्हीं सवालों पर चिंतन करता है। इस तरह से जीवन को जानने के लिए दर्शन शास्त्र को विभिन्न कार्यों में इधर-उधर उलझना पड़ता है। जीवन को भली भांति पूर्वक जानकर उसे सही मार्ग की ओर ले जाना ही मानव का परम उद्देश्य माना जाता है। जो जीवन को यथार्थ रूप में जानने की अभिलाषा रखते हैं दर्शनशास्त्र सिर्फ उन लोगों के लिए ही है। इस प्रकार से दार्शनिकों के लिए मनोविज्ञान भी बहुत काम की चीज है। अगर मनुष्य को जानना चाहते हैं तो भिन्न-भिन्न परिस्थितियों में उसका अध्ययन करना होगा। अब यहां पर सवाल यह उठता है कि इतने सारे शास्त्रों के रहने के बावजूद भी अलग से दर्शनशास्त्र की आवश्यकता क्यों पड़ी? एक साथ विचार करने के लिए भी एक शास्त्र की आवश्यकता है। इस प्रकार का जो शास्त्र है वह दर्शन शास्त्र है। एक साथ संपूर्ण ब्रह्मांड पर विचार करने वाला शास्त्र दर्शन है। क्योंकि बिना संपूर्ण ब्रह्मांड को देखे जीवन के असली स्वरूप को नहीं समझा जा सकता है। इसलिए सृष्टि की रचना सृष्टि का उपादान कारण आदि पर दर्शनशास्त्र में विचार किया जाता है। वेदों से ही भारतीय दर्शन की शुरुआत होती है। जगत की प्राचीन साहित्यिक संपदा है। प्रकृति देवी का रंग स्थल भारतवर्ष है। प्राकृतिक सुंदरता से भरपूर इस देश में दर्शन का प्रारंभ प्रकृति काव्य के रूप में सहज माना जाता था। उपनिषदों को ज्ञान की प्रधानता होने के कारण वेदांत कहा जाता है। भारतीय चिंतन में नई सदी की शुरुआत बुद्ध के काल से होता है। बुद्ध के ही समकालीन जैन धर्म के प्रचारक महावीर भी थे। वैदिक धर्म के कर्मकांड के विरुद्ध महावीर एवं बुद्ध ने क्रांति किया। इनकी क्रांति ने सामाजिक तथा धार्मिक आंदोलन का एक प्रबल स्वरूप धारण कर लिया। जैन एवं बौद्ध धर्म उन्हीं आंदोलन के प्रतीक हैं। इन क्रांति की जो मुख्य रूप से विशेषता थी वह थी वेदों की मान्यता का विरोध एवं वैदिक धर्म का खंडन। जैन एवं बौद्ध धर्म वेद को नहीं मानते हैं इस कारण वह नास्तिक कहलाए। यह ईश्वर की सत्ता को भी स्वीकार नहीं करते बौद्ध एवं प्राचीन जैन धर्म में सबसे अधिक प्रधानता आचार - शास्त्र की है। अहिंसा तथा कर्म उनके प्रमुख आधार स्तंभ माने जाते हैं।" [12] नास्तिक दर्शनों के विरोध ने एक नई चेतना भारतीय विचारधारा में उत्पन्न कर दी। वैदिक धर्म की अंध परंपरा सजग हो उठी। जैन एवं बौद्ध धर्म का जो शुरुआती स्वरूप था वह सामाजिक क्रांति के रूप में था। इसलिए लोकप्रिय स्वरूप में वैदिक धर्म तत्व को डालने का प्रयास जरूरी हो गया। महाभारत, पुराण, रामायण एवं श्रीमद् भागवत गीता यह सभी इन्हीं

प्रयासों के ही परिणाम हैं।' [13] भारतीय दर्शन बहुत पुराना है प्राचीन ज्ञान राशि का भंडार वेद को कहा जाता है हमारे पूर्वज ऋषियों के द्वारा तप:पूत आत्मा में अनुभूत अनेक अखंड एवं नित्य शक्तियों का उनमें संनिधान है। इसी कारण आगम रूप से वेद प्रमाण माने जाते हैं। भारतीय दर्शन की जो मुख्य विशेषता है वह आगम प्रमाण है। लेकिन विचार एवं तर्क की प्रगति में आगम की प्रमाणिकता बाधक नहीं बनी। परस्पर संघर्ष एवं विरोध में आस्तिक एवं नास्तिक दर्शनों के तर्क प्रणालियों का विकास तेजी से होने लगा।" [14]

वेद, उपनिषद एवं गीता, जैन तथा बौद्ध सांख्य योग एवं वेदांत चिंतन से अधिक व्यवहार के विषय हैं। मानव की बौद्धिक इच्छा को जगत के विश्लेषण द्वारा समाधान करना उनका मुख्य उद्देश्य एवं लक्ष्य है। ठीक इनके विपरीत जो भारतीय दर्शन है उनकी दृष्टि अंतर्मुखी है। क्योंकि वहां पर जगत की बौद्धिक व्याख्या की अपेक्षा सबसे ज्यादा महत्व आध्यात्मिक सत्य को दिया गया है। आत्मज्ञान को ही भारतीय दर्शनों ने अपने जीवन का परम लक्ष्य स्वीकार किया है। वेदांतो एवं उपनिषदों में ब्रह्म ज्ञान एवं आत्मज्ञान ही सब कुछ है। भारतीय दर्शनों में जो स्थान उपनिषद एवं वेदांत का है उसे यही कह सकते हैं कि आत्मज्ञान का भारतीय दर्शन में सबसे परम महत्व है" [15] "भारतीय चिंतन पश्चिमी दर्शन की तरह चिंतन में दर्शन धर्म शास्त्र एवं आचार्य शास्त्र पृथक एवं स्वतंत्र विभाग नहीं बन सके। श्रेय की स्पृहा एवं सत्य की जिज्ञासा ईश्वर की अवस्था इन तीनों का मूल एक ही चेतन में है एवं तीनों का उद्देश्य साधारण तौर पर जीवन को कृतार्थ करना है। परमात्मा की श्रद्धा के बिना श्रेय के व्यवहार एवं सत्य की खोज सिर्फ एक सैद्धांतिक प्रथा का एक पक्षीय प्रयास है। ईश्वर की आराधना सत्य की खोज श्रेय की साधना समन्वित रूप में ही बढ़ता रहा।" [16]

"भारतीय दर्शन में जो मोक्ष की अवधारणा प्रचलित है वह उनके मौलिक धारणा है दार्शनिक प्रक्रिया बिना कोई उद्देश्य के ही है ऐसा नहीं है दुखों का अभाव या आनंद की प्राप्ति करना ही उसका एकमात्र लक्ष्य है पुरुष के कैवल्य को सांख्य दर्शन में मोक्ष एवं प्रकृति पुरुष के विवेक ज्ञान को उसका साधन माना गया है। ऋग्वेद इस संसार की सबसे प्राचीन रचना मानी जाती है। दार्शनिक एवं धार्मिक विचारों का सबसे पहले उल्लेख मनुष्य भाषा के रूप में ऋग्वेद में ही प्राप्त होता है"। [17]

ऋग्वेद में दार्शनिक विचारों का उल्लेख विस्तृत रूप में प्राप्त होता है। तर्क के जाल से सुरक्षित तेजस्वी षड्दर्शनों को छोड़कर दार्शनिक सिद्धांत प्राप्त करने के लिए ऋग्वेद की तोतली वाणी भला किस रुचिकर होगी? कई ऐसे मंत्र का उल्लेख ऋग्वेद में किया गया है जो इस बात की साक्षी को प्रस्तुत करते हैं कि ईश्वर की भावना आर्यों में इतने प्राचीन काल में उत्पन्न हो गई थी। ईश्वर की उन भावना को अभिव्यक्त करने वाला वह प्रसिद्ध मंत्र इस प्रकार है 'एकं सद्विप्रा बहुधा वदंति। अग्निं यमं मातरिश्वानमाहू:'। [18] अर्थात एक ही विद्वान जन उसे अनेकों नाम से बुलाते हैं कोई अग्नि के नाम से बुलाता है तो कोई यम एवं कोई वायु के नाम से पुकारता है। यही आर्यों का दार्शनिक एकदेव वाद है। ऋग्वेद के नासदीय सूक्त की गिनती विश्व साहित्य के आश्चर्य में अवश्य सम्मिलित होनी चाहिए। ऋग्वेद के 'पुरुष सूक्त' [19] नासदीय सूक्त से ही कम प्रसिद्ध हैं इसमें यह बताया गया है कि उसे विराट पुरुष के द्वारा ही इस सृष्टि की उत्पत्ति हुई है।" [20]

सूत्र-साहित्य

जब वैदिक साहित्य बहुत अधिक बढ़ गया और वैदिक विषय के विचार को अपने विचारों को क्रमबद्ध करने की आवश्यकता अनुभव होने लगी तब सूत्र साहित्य की उत्पत्ति हुई। दर्शनों के मुख्य सिद्धांत संक्षेप में सूत्रों के रूप में रखे गए हैं। इन्हें जहां तक संभव हो सका छोटे से छोटे कलेवर में शंका रहित किंतु वास्तविक तत्व को प्रकट करने वाले रूप में रखा गया है। जिसमें अनावश्यक व अशुद्ध अंश के लिए कोई स्थान नहीं है। दार्शनिक विचारों के विभिन्न क्षेत्रों में विभिन्न पद्धतियों का विकास हुआ। दर्शनों का विकास सूत्रों के निर्माण से बहुत समय पहले हो गया होगा। दार्शनिक सूत्रों की संपूर्ण शैली एवं भाव से यह प्रतीत होता है कि एक करीब एक ही समय में बने हैं।" [21] प्रत्येक दर्शन के निर्माण की प्रारंभिक अवस्था में दार्शनिक विचार का एक प्रकार का उबाल सा आता है। जो आगे चलकर एक विशेष स्थल पर सूत्र रूप में संक्षिप्त आकार ग्रहण करता है। बुद्ध के समय से लेकर अशोक के समय तक सूत्र ग्रंथों का निर्माण हुआ ।दर्शन साहित्य में दार्शनिक विज्ञान आत्म चेतन रूप में विद्यमान है। वेदों में वर्णित अध्यात्म अनुभवों की तार्किक आलोचना इन ग्रंथो का विषय है। ज्ञान की यथार्थता एवं उसे प्राप्त करने के साधन प्रत्येक दर्शन का एक मुख्य अध्याय है। ज्ञान के विषय में प्रत्येक दार्शनिक योजना अपना स्वतंत्र सिद्धांत प्रतिपादित करती है जो उस दर्शन के प्रतिपाद्य विषय अध्यात्म विद्या का मुख्य भाग है जितने भी वैदिक दर्शन है वे बौद्धों के संशय वाद के विरुद्ध हैं तथा एक शाश्वत अस्थिर परिवर्तन कम के विपरीत एक उद्देश्य पूर्ण वास्तविकता और सत्य के पक्ष में अपना झंडा ऊंचा करते हैं। सभी दर्शन इस महान विश्व रूपी प्रवाह के दृष्टिकोण को अंगीकार करते हैं। अन्य सारे वैदिक दर्शनों में पूर्व मीमांसा को छोड़कर बाकी सभी का लक्ष्य मोक्ष प्राप्ति के क्रियात्मक उपायों को खोज निकालना है। वेदों की प्रमाणिकता का मान्य होने से यह ध्वनित होता है कि इन सारे दर्शनों का विकास विचारधारा के एक ही आदिम स्रोत से हुआ है।" [22]

निष्कर्ष:

इस प्रकार से यह कहा जा सकता है कि वेदों से ही दर्शन शास्त्र का प्रादुर्भाव हुआ है। आत्मा, ईश्वर, सृष्टि, कर्म एवं मोक्ष जैसे विषयों पर वेदों ने ही सवाल किया जिसे आगे चलकर उपनिषद एवं भारतीय दर्शनों ने उन्हें व्यवस्थित करने का कार्य किया। वेद अगर बीज है तो वही दर्शनशास्त्र वृक्ष की भांति है। जिज्ञासा एवं शंकालुता की भावना जिसने दर्शनशास्त्र को जन्म दिया है कभी-कभी वह इतनी अत्यधिक प्रबल हो जाती है कि सृष्टि के जितने आधारभूत विषय हैं उन सब पर भी प्रश्न करना आरंभ कर देती है। इस प्रकार वैदिक विचारधाराओं से उत्प्रोत होकर अद्वैतवादी धाराओं का प्रचलन होने लगा।

संदर्भ सूची:

1. भारतीय दर्शन - 2, डॉ राधाकृष्णन, हिन्दी अनुवाद राजपाल एंड सन्ज1590, मदरसा रोड कश्मीरी गेट, दिल्ली- 11006, संस्करण: 2024, पृष्ठ -22
2. वही, पृष्ठ - 20.
3. वही, पृष्ठ - 21.
4. भारतीय दर्शन का इतिहास, भाग-एक, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, द्वितीय संस्करण :1988, पृष्ठ - 6
5. वही, पृष्ठ - 6
6. वैदिक साहित्य एवं संस्कृति, डॉ कपिलदेव द्विवेदी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, 2015, पृष्ठ - 170
7. भारतीय दर्शन - 2, डॉ राधाकृष्णन, हिंदी अनुवाद राजपाल एंड सन्ज 1590, मदरसा रोड, कश्मीरी गेट, दिल्ली 110006, संस्करण: 2024, पृष्ठ - 22- 23
8. ऋग्वेद संहिता, 10/129/1- 7
9. छान्दोग्योपनिषद् 3/14/1, सानुवाद शांकरभाष्य, गीताप्रेस, गोरखपुर, पृष्ठ - 303
10. बृहदारण्यक उपनिषद, 1/4/10
11. ईशोपनिषद्, श्लोक - 1, गीता प्रेस, गोरखपुर, पृष्ठ - 14
12. भारतीय दर्शनशास्त्र का इतिहास, डॉ न० कि० देवराज, हिंदुस्तानी एकेडमी उत्तर प्रदेश, इलाहाबाद, 1950, पृष्ठ - 15

13. वही, पृष्ठ - 15
14. वही, पृष्ठ - 18
15. वही, पृष्ठ- 19
16. वही, पृष्ठ - 20
17. वही, पृष्ठ - 32
18. ऋग्वेद 1/144/46
19. ऋग्वेद 10/90
20. भारतीय दर्शन शास्त्र का इतिहास, डॉ नo किo देवराज, हिंदुस्तानी एकेडमी उत्तर प्रदेश, इलाहाबाद, 1950, पृष्ठ - 32
21. भारतीय दर्शन - 2, डॉ राधाकृष्णन, हिन्दी अनुवाद राजपाल एंड सन्ज 1590, मदरसा रोड, कश्मीरी गेट, दिल्ली 110006, संस्करण:- 2024, पृष्ठ - 24- 25
22. वही, पृष्ठ- 25- 27